तृतीय अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास के नारी पात्र"

तृतीय अध्याय

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास के नारी पात्र"

आज के समाजव्यवस्था में नर और नारी दोनों संसाररूपी रथ के दो पहिए है। उनके बिना संसार अधूरा है। सृष्टि के विकास क्रम में दोनों का स्थान महत्वूपर्ण है। इस पुरूषप्रधान संस्कृति में नारी को जगत—जननी गृहलक्ष्मी मानकर पितृदेव भव, आचार्य देवोभव कहकर आचार्य और पिता को पहला स्थान दिया है। लेकिन इसी संस्कृति में नारी को गौण स्थान दिया है।

हमें दिखायी देता है कि आज नारी मुक्ति, नारी शिक्षा, समान अधिकार, नारी सबलीकरण और आरक्षण की बातों पर जोर दिया जा रहा है। परंतु इससे नारी—जीवन में कितना परिवर्तन हुआ यह सोचने की बात है। महानगरीय और नागरी संस्कृति में पढ़ी—लिखी नारी का जीवन परिवर्तित हुआ है, मगर इससे पूरी नारी परिवर्तित हो गई ऐसा कहना गलत लगता है। लेकिन ग्रामीण समाजव्यवस्था में आज भी ग्रामीण नारी का रूप पिछड़ा हुआ दिखाई देता है। जब तक व्यवस्था में तथा मानसिकता में परिवर्तन नहीं होता तब तक यह असंभव है।

नारी अस्तित्व और अस्मिता के महत्व के बारे में रमेश कुमार ने कहा है,"नारी प्रकृति का यह वरदन है, जिसके बिना बचपन ममतारहित, जवानी आनंदरहित एवं बुढ़ापा असहाय हो जाता है।"[१] भारतीय समाजव्यवस्था में नारी की स्थिति हीन—दीन थी। लेकिन स्वातंञ्योत्तर काल में नारी की स्थिति में सुधार हुआ। शिक्षा प्रसार के कारण नारी आत्मनिर्भर बनी। परंतु आज भी रूढ़ि—परंपरा संस्कार

---

१. रमेश कुमार शनी—जीवन मुक्ति बोध, पृष्ठ १०१.

में बद्ध नारी के दर्शन होते है। नागरीय नारी की स्थिति संतोषजनक दिखाई देती है, लेकिन आज भी ग्रामीण नारी की स्थिती सोचनीय है। मैत्रेयी पुष्पाजी के विवेच्य उपन्यासों में ग्रामीण नारी पात्रों के दर्शन होते है।

समाज के विकास में योगदान देनेवाली और समाज का आधार बनी नारी अपने विभिन्न रूपों में महत्वपूर्ण है। डॉ. शशिभूषण मानते है,"नारी समाज का महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज की श्रेष्ठता का निर्णय मुख्यतः समाज में नारी की स्थिति पर निर्भर रहता है। नारी समाज की उन्नति, अवनति का द्योतक बन जाती है।" अर्थात नारी के गुण उनके रूपों के आधार पर बने है।

विवेच्य उपन्यासों में नारी पात्रों के ग्रामीण, विद्रोही, आधुनिक, परंपरागत, अनपढ़, क्रांतिकारी आदि रूप दिखायी देते है।

३.१ ग्रामीण नारी पात्र :—

नागरीय नारी से ग्रामीण नारी का रूप अलग होता है। ग्रामीण नारी पर बदली हुई परिस्थितियों का प्रभाव ज्यादा नहीं होता। वह अपने परंपरागत संस्कारों का पालन करती है। अपने में बदलाव लाने की उसकी मानसिकता नहीं होती। वह घर के पुरूषों के बंधन में रहती है। घर से बाहर कदम रखना अच्छा नहीं मानती। वह नारी खाने—पिने तथा पहनने में भी परंपरागत है। नागरी नारी के तुलना में ग्रामीण नारी को बहुत कष्ट उठाने पड़ते है। लेकिन ग्रामीण नारी में नागरीय नारी की अपेक्षा साहस अधिक होता है।

ग्रामीण नारी में विविध रूप दिखायी देते है। जैसे अंधविश्वासी, रूढ़ि—परंपरा से ग्रस्त नारी, अशिक्षित नारी, सुशिक्षित नारी आदि अनेक रूप दिखायी देते है।

३.१.१ अंधविश्वासी ग्रामीण नारी :—

'चाक' की रेशम की सास हुकुमकौर अंधविश्वासी ग्रामीण नारी के रूप में हमारे सामने आती है। सारंग की बहन रेशम भरी जवानी में विधवा होकर भी गर्भवति बनती है। यह बात समाजव्यवस्था तथा बिरादरी के खिलाफ है। उसकी सास इसी कारण उसे परेशान करती है। गालियॉ देती है। मारपीट करती है। ग्रामीण नारी में शिक्षा के अभाव के कारण असभ्यता का अभाव दिखाई देता है। अपने बोलने से दूसरों के मन पर क्या बितेगा यह विचार करने की प्रवृत्ति नहीं होती। रेशम की सास उसकी चोटी पकड़कर मारती है। और पेट में से बच्चा गिराने के लिए तोफा तेलिन के यहॉ से शर्तियॉ दवा लाते है। उसका मानना है कि काढ़े को तोफा के हाथ का स्पर्श ही असरदार बनाता है। यह विद्या सिर्फ तोफा तेलिन को मालूम है। इसी अंधविश्वास के कारण वह तोफा तेलिन के यहॉ से लायी शर्तियॉ दवा रेशम को पिलाकर उसके बच्चे के साथ उसकी जान लेना चाहती है। इस तरह ग्रामीण जगहों पर नारी पर अत्याचार कर दिए जाते हैं और साथ ही हत्या की जाती है।

गॉवो में शिक्षा के अभाव के कारण ग्रामीण जीवन में अंधश्रद्धा अधिक रहती है। 'अगनपाखी' की भुवन सास अंधश्रद्धा के वजह से ही भुवन को पागल पति के साथ सती जाने को कहती है। तब भुवन अपनी जान बचाने के लिए वहॉ से भाग जाती है। लेकिन उसका पुतला बनाकर साजश्रृंगार करके पति के शव के साथ चिता में जलाया जाता है। इसतरह ग्रामीण नारी अपने परंपरागत रीति—रिवाज तथा संस्कारों को तोड़कर बाहर आना नहीं चाहती।

'अगनपाखी' के भुवन का पति कुँवर विजयसिंह पागल है। उसे बेटा हो जाए इसलिए भुवन की सास यज्ञ करवाती है। तब तांत्रिक

भुवन की चोटी पकडकर बोलता है, "इस चुडैल ने बूढ़े को वश में कर लिया है। मैं इसपर चढ़ी हवा उतारूँगा।"[१] इसतरह साधु उसपर मंत्र—तंत्र करके यज्ञ करता है।

भुवन की सास उसे जोगिन बनने को कहती है। इसतरह यहाँ अंधश्रद्धा के दर्शन होत है। आज भी ग्रामीण नारी परंपराओं तथा अंधविश्वासी नजर आती है।

३.१.२ रूढ़ि परंपरा के घेरे में ग्रस्त नारी :—

भारतीय ग्राम समाज ग्रामीण रूढ़िवादी परंपरा से ग्रस्त है। 'चाक' की सारंग अपने बेटे चंदन को आगरे भेजते समय उसके गले में मंगो दादी ने दिया सलामतजी का ताबीज बांध देने की बात अपने पति से कहती है। सारंग चंदन के उपर से राई, नौन तथा मिर्च भरी मिट्टी सात बार उतारकर पिछवाड़े को उछाल देती है। यहाँ रूढ़ि परंपरा से ग्रस्त नारी के रूप में सारंग के दर्शन होते है। 'चाक' के अतरपुर गॉव में रूढ़िवादी पंचायत में औरतों को बोलने का हक नहीं। 'चाक' की रेशम की सास का मानना है कि स्त्री विधवा होकर गर्भवति रहे यह बात समाज व्यवस्था, बिरादरी के खिलाफ है। विधवा को एक विधवा नारी की तरह ही अपना जीवन बिताना चाहिए यह उसकी धारणा है।

अतरपुर गॉव में जातिव्यवस्था के दर्शन होते है। उँचे जाति के लोग छोटी जाति के लोगों से स्पर्श करना पाप मानते है। गॉव में चट्टा चौथ के त्योहार के वक्त सारंग एक जाटिन होकर भी श्रीधर मास्टर जो एक कुंभार है उनके पैर छुती है। यह बातें गॉववाले रूढ़ि—परंपरा के खिलाफ मानते है।

'अगनपाखी' की नानी भी रूढ़ि—परंपराओं में जखड़ी है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी — पृष्ठ क्र. १२८

उसका मानना है कि बेटी पराए घर की अमानत है। भारतीय संस्कृती परंपरा से बेटे को श्रेष्ट माना जाता है। नानी अपनी बेटी भुवन को कहती है,"नादान मोंडी! अपने घर की अमानत तो बेटा होता है। बेटी और बेटी के पूत कैसे अपने हुए कहावत है न कि — पूत का पूतकरेजे को टूक धिय कौ पूत हरामी कौ मूत!"[१]

इसतरह परंपरासे बेटा और बेटी में फर्क किया जाता है।

'अगनपाखी' में रूढ़ि—परंपरा का एक अलग रूप दिखायी देता है। विराटा गॉव के लोग मंदिर के देवी की दुहाई लेकर स्त्री को बलि देते है। विराटा में ऐसे कई उदाहरण है। जैसे वनदेवी नाम लड़की विराटा की देवी की तरह बेतवा नदी की गोद में समा गयी। वैसे ही कुमुद और अब बारी थी भुवन की। भुवन को भी विधवा होने पर सती जाने को कहते है। इसतरह विराटा गॉव में रूढ़ि—परंपरा के घेरे में ग्रस्त नारी—जीवन के नारियों दर्शन होते है।

३.१.३ अशिक्षित नारी :

विवेच्य उपन्यासों में नारी का अशिक्षित रूप भी परिलक्षित होता है। प्रारंभिक युग में अशिक्षित नारी के दर्शन होते थे, लेकिन आज आधुनिक युग में शिक्षित नारी की संख्या बढ़ गयी है। फिर भी ग्रामीण जगहोंपर अभी भी पर्याप्त मात्रा में शिक्षा का प्रचार—प्रसार नहीं हुआ है।

'चाक' के अतरपुर गॉव में ज्यादातर औरतें अनपढ़ है। जो औरते पढ़ी—लिखी है, वे गोबर पानी में काम करके अपनी शिक्षा भूल चुकी है। रेशम भी अशिक्षित नारी के रूप में सामने आती है। उसकी सास और उसमें अशिक्षा के कारण ही झगड़े होते है और दोनों गालियॉ बकती है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी, पृ.क्र.२१

'चाक' की हरिप्यारी नाईन, गुलकंदी, पांचन्ना बीबी, खेरापतिन दादी और फत्तेसिंह की बीबी तथा चाची आदि अशिक्षित नारी के रूप में दिखायी देती है।

'अगनपाखी' में भुवन की मॉ तथा उसकी सास भी अशिक्षित नारी के रूप में परिलक्षित होती है।

३.१.४ शिक्षित नारी :—

विवेच्य उपन्यासों में नारी का शिक्षित रूप भी परिलक्षित होता है। आज के युग में स्त्री—शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। ऐसा माना जाता है कि परिवर में एक नारी के शिक्षित होने से पूरा परिवार शिक्षित बन जाता है। 'चाक' में ग्रामसेविका केंद्र में काम कर रही ग्रामसेविका बहनजी शिक्षित नारी का प्रतिक है। अतरपुर गॉव में ज्यादातर अनपढ़ नारियॉ है। इस गॉव में ज्यादातर अनपढ़ नारियॉ है। इस गॉव की सारंग को गुरूकुल से ग्यारह कक्षा तक पढ़ी बताया जाता है, मगर उसे चिठ्ठी लिखने के लिए कहनें पर उॅगलियॉ कॉपने लगती है लेकिन वह पति रंजीत के साथ बैठकर अखबार पढ़ती है। चरणसिंह बौहरे से ज्यादा मंत्र जानती है। और गॉव की गुलकंदी को पढ़ाती है।

'अगनपाखी' की भुवन पॉचवी कक्षा तक पढ़ी है। उसकी मॉ ने पॉचवी के बाद उसे पढ़ने नहीं दिया। उसने खेती में अपनी सहायता के लिए भुवन का सहारा लिया। दामिनी जो राजेश से प्यार करती थी वह भी बारहवी कक्षा तक पढ़ी है। इसतरह विवेच्य उपन्यासों में शिक्षित नारीयों के दर्शन होते है।

३.२ विद्रोही नारी पात्र :

किसी व्यक्ति को जब परंपरा से आ रहे नियम बंधन लगते है, या फिर उसे स्वतंत्रता न मिली हो, तब वह व्यक्ति विद्रोह पर उतर

जाती है। वह घुटन कुंठा महसूस करने लगती है। तभी वह व्यक्ति विद्रोह कर बैठती है। पुरूष की तरह स्त्री भी विद्रोह करने में कभी पीछे नहीं रही। ऐसे बहुतसे नारी के उदाहरण है, जिन्होंने जूल्म, अत्याचार के खिलाफ विद्रोह किया है। विद्रोही नारि को संस्कारों में खोखलेपन के सिवा और कुछ नजर नहीं आता। पुरानी मान्यताओं को तोडने में वह सहभागी होती है। उन्हें परंपरा के प्रति नफ़रत होती है। विद्रोही नारि के बारे में किरणबाला अरोडा कहती है,"विद्रोही नारियॉ सबकुछ चुपचाप न सहकर उन सबका विरोध करती है। जो उनके मार्ग में आते है, उनसे लड़ जाती है।"[१]

विद्रोही नारी समाज तथा परिस्थिती के प्रति विरोध कर उठती है। नई चेतना और नई शिक्षा का प्रमाण विद्रोह है। अंधश्रद्धा का विरोध करना विद्रोही नारी का प्रतिक है, जो व्यवस्था को नकारता है। विवेच्य उपन्यासों में मैत्रेयी पुष्पाजीने नारी के विद्रोही रूप को चित्रित किया है।

'चाक' की रेशम विधवा होकर भी गर्भधारण करती है। वह अपनी यौन–इच्छाओं को काबू में नहीं रख सकती। उसकी उम्र पचीस से उपर न होगी लेकिन वह अपने पुराने संस्कारों को भूलकर अपनी यौन–इच्छाएँ पूरी करके परंपरा और संस्कृती के प्रति विद्रोह करती है। रेशम की सास उसपर बहुत अत्याचार करती है। उसकी सास मारपीट करती है तब उसका हाथ रोकर खुद भी मारपीट करके संघर्ष करती है। रेशम का देवर भी मारपीठ करके संघर्ष करती है। रेशम का देवर भी उसे बुरी नजर से देखता है। सारंग को डर लगता है कि रेशम पर डोरिया कहीं अपनी पहलवानी अजमा लेगा। तब रेशम हिम्मत से शेरनी सी दहाड़ी हुए सारंग से कहती है

---

१. किरणबाला अरोडा–साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी, पृष्ठ १७४

"डोरिया जैसे देखे हैं तीन सौ साठ। उँगली छूकर तो देखे, भडुआ को कच्चा चबा जाऊँगी।"[१] यहाँ रेशम का विद्रोही रूप दिखाई देता है।

रेशम की सास उसका बच्चा गिराने के लिए उसे शर्तिया दवा देती है लेकिन गिलास के टूटने से उसकी जानन बचती है। त बवह विद्रोह पर उतरती है। लेकिन एक दिन डोरिया उसकी हत्या करता है। रेशम की बहन सारंग अपनी बहन की हत्या का बदला लेना चाहती है। वह विद्रोही नारी के रूप में डोरिया पर केस दायर करती है। उसके छूट जाने पर बौखला जाती है। तथा हायकोर्ट में अपील करती है। डोरिया उसका रास्ता रोककर उसके बच्चे को मारने की धमकी देता है तब सारंग विद्रोही बनती है। सारंग का पति रंजीत प्रतिशोध के रूप में बेटे चंदन को आगरा भेजना चाहती है लेकिन सारंग उसे रोक देती है। रंजीत सारंग को बौखलाकर घूसों से कूटने लगता है। तो असहायता में विक्षेप से भर उठी सारंग बिजली की फूर्ति से खूँटी से बंदूक उतारकर बेनिशान चलाती है और कहती है, "असल मर्द है तो छू चंदन को। छू?"[२]

'चाक' के फत्तेसिंह के विरोध के बावजूद भी उसकी पत्नी चुनाव के सिलसिले में सारंग के चौक में जुडी स्त्रियों के जुलूस में जाने की जिद करती है, लेकिन बौखलाकर फत्तेसिंह उसपर चरित्रभ्रष्टता का आरोप लगाकर हाथ उठाता है। तब उद्दीग्न होकर उसकी पत्नी गाली देकर कहती है,"पन्ना ने समझ लेना इस मरमानी को, तेरे जैसे, आदमी को तिनके की तरह उडा दूँगी।"[३] यहाँ दापत्यगत मर्यादा के प्रति नारी–विद्रोह दिखाई देता है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – चाक , पृ.क्र.२२
२. मैत्रेयी पुष्पा – चाक , पृ.क्र.४१२
३. मैत्रेयी पुष्पा – चाक , पृ.क्र.४१२

चाक की सारंग जब गुरूकुल में पढ़ रही थी। तब उसकी सहेली शकुंतला कुवारी माता बनने से खुदखुशी करती है। ऐसी अनेक लड़कियों का जीवन बरबाद होता है तब सारंग गुरूकुल की माताजी तथा संस्था के खिलाफ विद्रोह पर उतर जाती है।

'अगनपाखी' की भुवन भी परंपरा तथा पुरातन मान्यताओं के प्रति विद्रोह करती है। भुवन के मनोरूग्ण पति विजयसिंह के मृत्यु के बाद उसके ससूरालवाले उसे सती चढ़ाना चाहते है तब भुवन उनके प्रति विद्रोह करके वहॉ से भाग जाती है।

विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त विद्रोही नारी सड़ी गली मान्यता तथा परंपरा के प्रति विद्रोह करती है। रेशम जैसी नारी अन्याय करनेवाली सास के प्रति विद्रोह करती है। आज बहू अन्याय सहन करनेवाली नहीं रही। चाहे वह पढ़ी–लिखी हो या अनपढ़। पुराने रीति तथा संस्कारों के प्रति रेशम जैसे नारी विद्रोह करती है। सारंग जैसी नारी विद्रोह करके समाज और बिरादरी का विरोध करती है।

आज तक नारी को अबला मानकर उसका शोषण किया जाता है। आज शिक्षा प्रसार के कारण नारी मुक्ति आंदालन के कारण नारी में जागृति आ गयी है। परिणामत: अन्याय, अत्याचार, शोषण के खिलाफ अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए नारी विद्रोह कर रही हैं। इसतरह शोषित नारीयों में विद्रोही रूप दिखाई देता है।

३.३ आधुनिक नारी पात्र :–

पुरानी परंपरा के प्रति विद्रोह करके आधुनिक नारी स्वावलंबी रूप से जीवनयापन कर रही है। डॉ. घनश्याम भुतड़ा आधुनिक नारी के बारे में कहते है,"आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह कानूनी तरीके से अधिक सुरक्षित तथा आर्थि कदृष्टि से स्वतंत्र है,

नारी के इस स्वतंत्र प्रियता ने परंपरागत विवाह संस्था के सामने प्रश्नचिह्न लगा दिए है।"[१]

ग्रामीण नारी अनपढ़ होकर भी आधुनिक विचारों से प्रभावित है। जैसे 'चाक' की रेशम विधवा होने पर भी अपनी अतृप्त यौन इच्छाओं की पूर्ति करती है। और वह गर्भवति बन जाती है। इस बात से सास उसे गालियॉ देती है। दोनों में झगडा होता है। सास हुकुमकौर उसे पीहर जाने को कहती है तब वह बेझिझक जवाब देती है कि,"वहॉ क्या दूसरी दुनिया है अम्मा? फिर यह तो मेरा अपना घर है, हक से रह तो रही हूँ।"[२]

इसतरह यहॉ रेशम आधुनिक नारी के रूप में अपने ससुराल में हक जताती है।

रेशम विधवा होने पर भी स्वच्छंद रूप से जीवनयापन करना चाहती है। जब रेशम की सास कहती है कि बेटे की चिता ठंडी हो जाने देती तब रेशम प्रतिजवाब देते हुए कहती है कि,"अम्मॉ, तुम्हारे पूत की चिता ठंडी हो जाने से क्या मेरे देह की आग बुझ जाती? जीतों—मरतों का भेद भी भूल गई तुम? बेटा के संग मैं भी मरी मान ली?"[३]

रेशम अपने सास के अत्याचारों का प्रतिकार करती है। रेशम की सास जब उसे देवर डोरिया से ब्याह करने को कहती है तब रेशम पितासमान जेठ का हाथ पकड़ने से इन्कार करती है। अपनी सास बकबक से परेशान होकर कहती है,"मइयो, तुम मेरे पीछे क्यों पड़

---

१. डॉ. घनश्याम भुतड़ा—समकालीन हिंदी कहानियों में नारी क विविध रूप, पृष्ठ ६३
२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ २०
३. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ १९

गयी हो! आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि तू किसके संग सोया था? अब उसकी बॉह गह ले। मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रही होती कि पूत की उजड़ी जिंदगी बस गई।"[१] इसतरह रेशम स्त्री—पुरूष के अधिकारों के बारे में अपना बयान देती है।

रेशम की बहन सारंग भी पति रंजीत के विचारों का विरोध करती है। लेकिन खुद के विचारों को उसपर थोप देती है। वह पढ़ी—लिखी है। ग्यारहवीं कक्षा तक उसने शिक्षा प्राप्त कर ली है। पति जब उसे गालियॉ देता है, उससे बहस करता है त बवह भी पीछे नहीं हटती। पति के विरोध के बावजूद भी वह गॉव पंचायती चुनाव में प्रधानपद के लिए मास्टर श्रीधर से दिलखुलास बातें करती है। उसके प्रति आकर्षित होती है। श्रीधर को गॉव के कुछ लोग पीटते है तब उसकी सेवा करने जाती है और एक दिन उसे अपना सब कुछ समर्पित कर देती है। इस बारे में डॉ. साधना शाह कहती है,"आधुनिक स्त्री अपने को बनाए रखने के लिए वैवाहिक मूल्यों की परवाह नहीं करती। एक पुरूष से नहीं पटी तो दूसरे पुरूष के साथ हो ले ती है।"[२]

रेशम की बहन सारंग भी आधुनिक नारी के रूप में हमारे सामने आती है। प्रेम के मामले में आधुनिक नारी स्वतंत्र, स्वच्छंदी रही है। आधुनिक नारी में विद्रोह भी दिखाई देता है। सारंग जब गुरूकुल में पढ़ रही थी। तब उसकी सहेली शकुंतला तथा अन्य लड़कियों पर हुए अत्याचारों के प्रति विद्रोह करती है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ १९

२.डॉ. साधना शाह — नई कहानियों में आधुनिकता, पृष्ठ क्र. ५५

'चाक' की गुलकंदी अपने भाई हरपरसाद के खिलाफ जाकर बिसनुदेवा से गंधर्व–विवाह करती है। यहाँ गुलकंदी आधुनिक नारी के रूप में परिलक्षित होती है।

'चाक' की पांचन्ना बीबी भी विधवा होकर मेहताबसिंह से आँखे लड़ाती है। नारी के स्वच्छंदी रूप में उसकी आधुनिकता नजर आती है।

'अगनपाखी' की भुवन एक ग्रामीण लड़की है। वह बचपन से ही अपनी बहन के बेटे चंदर के प्रति आकर्षित थी। वह मन ही मन उसे प्यार करती थी। लेकिन उसकी शादी मनोरूग्ण कुँवर विजयसिंह से होती है। शादी के बाद पति के पागल होने का पता चलने पर वह मायके वापस आती है और फिर वापस ससुराल जाने से इन्कार करती है। वह माँ से कहती है,"अम्मा ब्याह करना पाप नहीं तो ब्याह छोड़ना क्यों पाप है? तुम्हें तो वर के बारे में कुछ पता ही नही था। अब मैं अपनी अक्ल के हिसाब से जो भी करूँ। नरक स्वरग मेरे लिए बनेगा।"[१] इस तरह भुवन अपने विचार स्वच्छंद रूप से माँ से कहती है। भुवन की सास उसे अपने पागल बच्चे की तरह प्यार करने को कहती है। तब भुवन भुवन झट से जवाब देती है,"प्यार तो उससे होता है अम्मा, जो हम जैसा ही हो। बूढ़े से बच्चा प्यार करेगा? जवानी में कोई बच्चा से प्यार करता है? तुम लोगों की बातें मेरी समझ में नही आती। कैसा पतिव्रता धर्म सिखाती हो? और इस धरम का मतलब मेरी समझ में क्यों नहीं आता?"[२] इस तरह भुवन के बातों सह लगता है कि वह आधुनिक विचारों से प्रभावित है। वह अपने बहन के बेटे से प्यार करने में हिचकिचाती

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी, पृष्ठ ७७

२. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी, पृष्ठ ७७

नहीं है।

भुवन के ससूरालवाले उसके पति के मृत्यु के बाद उसे सती चढ़ाना चाहते है। लेकिन भुवन जान बचाने के लिए वहॉ से भाग जाती है। वह आधुनिक विचारों से प्रभावित होने के कारण सतीप्रथा का विरोध करती है। और चंदर के साथ भाग जाती है। चंदर की सहायता लेकर वह अपने देवर अजयसिंह के हकदारी पर एतराज करते हुए पति के हिस्से की जायदाद में अपना हक मॉगती है। वह कचहरी में जाकर पति के सम्पत्ति में हक मॉगती है। इसतरह भुवन में अपने हक के लिए लड़नेवाली आधुनिक नारी दिखायी देती है।

अत: नारी के इन आधुनिक रूपों को देखते हुए कहा जा सकता है कि आधुनिक नारी एक से ज्यादा पुरूषों से संबंध रखने में जरा भी हिचकिचाहट महसुस नहीं करती। पुरूषप्रधान व्यवस्था को नकारनेवाली आधुनिक नारी परिलक्षित होती है।

३.४ परंपरागत नारी पात्र :—

भारतीय संस्कृति में रूढ़ि—परंपराएँ सदियों से आ रही है। इन परंपरा का निर्वाहन करना भारतीय नारी की प्रवृत्ति हो गयी है। इसी प्रवृत्ति के कारण नारी का परंपरागत रूप भी दिखाई देता है। वैश्वकिरण के कारण नगरीय समाज में जितना परिवर्तन हुआ है, उतना ग्रामीण समाज में नहीं हुआ है। यही कारण है कि आज भी ग्रामीण समाज में संस्कारशील नारियों की कमी नही है। ये नारियॉ परंपरागत रूप भी दिखाई देता है। वैश्वीकरण के कारण नगरीय समाज में जितना परिवर्तन हुआ है, उतना ग्रामीण समाज में नहीं हुआ है। यहीं कारण है कि आज भी ग्रामीण समाज में संस्कारशील नारियों की कभी नहीं है। ये नारियॉ परंपरागत संस्कार छोड नहीं पाती न त्याग सकती है। इस बारे में डॉ. किरणबाला अरोड़ा कहती

है,"परंपरागत नारियॉ अपने प्रति किए जानेवाले अत्याचार एवं शोषण को अपनी नियति मान लेती है। और उसी रूप में अपना जीवन काट देती है।"[१] परंपरागत नारी में निम्नलिखित रूप दिखाई देते है।

३.४.१ विवाह को स्वीकृत करनेवाली :—

परंपरागत नारी विवाह को बंधन न मानकर रिश्तो में बंधी डोर मानती है। विवाह के उपरांत वह मंगलसूत्र पहनकर मंगल आचरण में रहती है। ये नारियॉ पति की सेवा करना अपना कर्तव्य मानती है। 'अगनपाखी' की भुवन की मॉ पतिव्रता नारी के रूप में दिखाई देती है। ये नारियॉ पति की सेवा तथा घर की चार दिवारों में रहना अपना कर्तव्य मानती है। समाज पति के अन्याय का विरोध करने की उसमें शक्ति नहीं होती।

३.४.२ मॉ के रूप में परंपरागत नारी :—

जिस नारी में परंपरागत आचार—विचार, आधार, वेशभूषा के दर्शन होते है उस नारी को परंपरागत नारी माना जाता है। 'चाक' की सारंग परंपरागत मॉ के रूप में दृष्टिगोचर होती है। अपने बेटे चंदन को बचाने के लिए वह पढ़ाई के लिए आगरा रात तड़पती है। डोरिया के आदमी चंदन को मारने की धमकी देते है तब वह सुरक्षा हेतू चंदन को अपने देवर के यहॉ भेजती है। रेशम की सास भी परंपरागत मॉ के रूप में दिखाई देती है।

'अगनपाखी' की भुवन को शादी के बाद पागल पति की जानकारी होती है। त बवह मायके आती है। भुवन की मॉ परंपरागत मॉ के रूप में उसे समझाबुझाकर ससूराल जाने को कहती है। और विनंती करती है,"बेटी तू तप में उतरी है, तेरे तप से

---

१. डॉ. किरणबाला अरोडा— साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी — पृष्ठ १७५.

विजयसिंह ठीक हो जाएगा एक दिन!"[१] इस तरह गेंदारानी एक परंपरागत मॉ के रूप के अपनी बेटी को समझाती है।

'चाक' की हुकुमकौर भी पारंपारिक मॉ के रूप में दिखाई देती है। तथा हरिप्यार नाईन भी परंपरागत मॉ के रूप में दिखाई देती है।

३.४.३ पत्नी के रूप में परंपरागत नारी :—

परंपरा से चलि आयी ससुराल की रूढ़ियों का पालन करती है। भुवन की सास भी पति के साथ सती जाना खानदान की रूढ़ि—परंपरा मानती है। यहॉ परंपरागत बहू का रूप दृष्टिगोचर होता है।

३.४.५ सास के रूप में परंपरागत नारी :—

परंपरागत रूपी सास पुराने संस्कारों में जकडी रहती है। 'चाक' की हुकुमकौर अपनी बहू पर मनमाने ढंग से जुल्म करती है। रेशम के विधवा होने पर पहले मीठी बातें करती है। लेकिन जब वह गर्भवति बनती है। परंपरागत रूप से हर सास अपने बहू पर अत्याचार करती है। यहॉ हुकुमकौर का परंपरागत सास के रूप में परिलक्षित होती है।

'अगनपाखी' के भुवन की सास भी परंपरागत रूप में घर की रिती—परंपराओं को बहू पर थोपती है। पति के मृत्यु के पश्चात उसके साथ सती जाना घर की परंपरा मानती है। बेटे की मृत्यु के पश्चात वह भुवन को सती जाने के लिए कहती है। उसे भुवन का विधवा बनकर रहना तथा दुसरी शादी करना मंजूर नहीं है।

इसतरह विवेच्य उपन्यासों में सास के रूप में परंपरागत नारी परिलक्षित होती है।

परंपरागत नारी के रूप में 'चाक' की माताजी नजर आती है। 'चाक' की शकुंतला गुरूकुल में पढ़ती थी। वह जवानी में भूल

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — अगनपाखी, पृष्ठ ७५

करती है। और गर्भवति बनती है। तब माताजी उसे कोठडी में बंद करके उसपर अत्याचार करती है। यह सब बातें गुरूकुल के नियम तथा समाजव्यवस्था के खिलाफ मानती है। यहॉ माताजी का परंपरागत नारी रूप दिखायी देता है।

यहॉ स्पष्ट है कि पारंपारिक नारी खोखले रीति–रिवाजों को निभाते अपनी जिंदगी को समाप्त करती है। वह पुरूषों के अनुयाय को सहना धर्म मानती है। ग्रामीण जगहों पर नारी का यह रूप देखने को मिलता है।

३.५ अनपढ़ नारी पात्र :

आज देश, समाज और परिवार के लिए नारियों का अनपढ़ होना अत्यंत हानीप्रद है। नारी स्वयं अशिक्षित होने से उसका प्रभाव समाज की प्रत्येक ईकाई पर पड़ता है। स्वयं नारी भी अनेक स्वर्ण अवसरों से वंचित हो जाती है। नारी के शिखित होने से ही देश का विकास होगा। जिस देश में अनपढ़ नारि की भरमार हो, वह देश कभी विकसित नहीं हो सकता। भ्रष्ट समाजव्यवस्था में व्याप्त अशिक्षा के कारण नारी विकास के तमाम रास्ते अशिक्षा के कारण नारी विकास के तमाम रास्ते रोक दिए है। इस संदर्भ में क्षमा शर्मा लिखती है,"बच्चियों कों पढ़ा–लिखाकर क्यों पैसा और समय बर्बाद किया जाए क्योंकि पकानी तो आखिर उन्हें ही रोटी ही है। दरअसल हमारे समाज की इन्हीं अवधारणाओं ने स्त्रियों के विकास के सारे रास्ते बंद कर रखे है।"[१]

विवेच्य उपन्यासों की ग्रामीण नारियॉ अधिकतर अनपढ़ दिखाई देती है। 'चाक' के अतरपुर गॉव की ज्यादातर औरतें अनपढ़ है। जैसे रेशम, गुलकंदी, लौंगसिरी बीबी, फत्तेसिंह की बीबी,

---

१. क्षमा शर्मा – स्त्री का समय – पृष्ठ २७

पांचन्नाबीबी, हरिप्यारी नाईन, हुकुमकौर आदि नारियॉ अनपढ़ है।

३.५.१ सास के रूप में अनपढ़ नारी :—

'चाक' की हुकुमकौर एक अनपढ़ नारी है। वह सारंग की बहन रेशम की सास है। वह अनपढ़ होने के कारण पुरानें रीति रिवाजों को मानती है। अपनी बहू पर अत्याचार करती है। तथा बहू के विधवा होकर गर्भवति बनने पर उसे मारपीट करती है। वह गॉव के तोफा—तेलीन के पास जाकर रेशम का बच्चा गिराने के लिए शर्तिया दवा लाती है। इसतरह वह अपने बहु के इच्छाओं न जानकर उसे मारने की कोशिश करती है। रेशम की सास अनपढ़ होने से ही स्त्री—पुरूष में भेद करती है। वह अपने बहू से कहती है,"मेरा बेटा पेट टॉगकर न आ गया होता। मर्द जात दस गली नॉखे तब भी वहीं जान सकता कोई। तू लुगाई की जात होकर मर्दो जैसा हौसला जुटा रही है? रेसमिया, बैयर घी का मटका होता है, आदमी की ऑच पाए भसम उसी को होना पड़ता है। तू स्वाहा हो जाएगी।"[१]

इसतरह रेशम की सास अनपढ़ होने के कारण वह उसे गालियॉ देती है। उससे अच्छा बर्ताव नहीं करती। 'अगनपाखी' की भुवन की सास भी अनपढ़ है। वह भी अंधविश्वासी है। उसका बेटा कुँवर विजयसिंह पागल है। लेकिन वह पोते का मुँह देखना चाहती है। इसलिए बहू भुवन को जोगिन बनाकर यज्ञ में बिठाती है। बाबा महाराजाओं को उसे दिखाती है।

भुवन की सास पुराने रिति—रिवाजों को मानती है इसिलिए भुवन को पति के मृत्यु के पश्चात सती जाने को कहती है। भुवन की सास अनपढ़ हैं इसलिए अंधविश्वासी है और पुराने रूढ़ियों से चिपकी रहती है। इसतरह सास का अनपढ़ नारी रूप दिखायी देता है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ १९

३.५.२ बहू के रूप में अनपढ़ नारी :—

'चाक' की रेशम एक अनपढ़ नारी है। वह हुकुमकौर की बहू है। सास की तरह वह भी अनपढ़ है। वह घ्झर के सारे काम करती है। वह गोबर—पानी के काम करती है। रेशम अनपढ़ है इसलिए वह भी सास की तरह झगड़ती है। सास को भी उल्टी गालियॉ देती है। रेशम अनपढ़ होकर भी अच्छे—बेरी की परख रखती है। इसलिए वह बापसमान जेठ डोरिया से शादी करने से इन्कार करती है। 'अगनपाखी' की मन्नू जो भुवन की बहन है। वह भी एक अनपढ़ बहू है।

३.५.३ मॉ के रूप में अनपढ़ नारी :

'चाक' की गुलकंदी की मॉ हरिप्यारी नाईन एक अनपढ़ मॉ है। वह अपनी बेटी का ब्याह बिरादी के आदमी से करना चाहती है। लेकिन गुलकंदीद बिसनुदेवा से प्यार करती है। यह बात हरिप्यारी को अच्छी नहीं लगती तो दोनों जाकर गंधर्व विवाह करके आते है। गुलकंदी की मॉ पारंपारिक अनपढ़ नारी के रूप में प्रतीत होती है।

'अगनपाखी' की भुवन की मॉ गेंदारानी अनपढ़ है। वह घर के सारे काम करती है। साथ ही खेत में मजदूरी करने जाती है। भुवन की सास और कुँवर विजयसिंह की मॉ भी अनपढ़ है। वह अंधविश्वासी है। पति के मृत्यु के पश्चात सती जाना ही पत्नी का कर्तव्य मानती है।

इसतरह यहॉ स्पष्ट है कि पारंपारिक नारी खोखले रीति रिवाजों को निभाते—निभाते अनपढ़ नारि पारंपारिक रूप में दृष्टिगोचर होती है।

आधुनिक युग में समाजसुधारकों ने साहित्यकारों ने नारी शिक्षा पर बल दिया और विघातक रूढ़ि—परंपराओं का विरोध किया। समाज के सुधार में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इसलिए कहा

जाता है – समाज एवं देश की प्रगति नारी की प्रगति पर निर्भर है। परिवार की एक नारी शिक्षित हो तो पूरा परिवार शिक्षित रहता है। यही बात नारी की महत्ता को स्पष्ट करती है। लेकिन ग्रामीण जगह पर नारी का अनपढ़ तथा अशिक्षित रूप परिलक्षित होता है।

❖क्रांतिकारी नारी पात्र :—

विवेच्य उपन्यास मं प्राप्त नारी के विविध रूपों में नारी का क्रांतिकारी रूप भी दृष्टिगोचर होता है। क्रांतिकारी नारी प्राप्त परिस्थिति को बदलने का साहस करती है। क्रांति का अर्थ है बदल तथा परिवर्तन। वह समाज की प्रचलित मान्यताओं, रूढ़ियों अंधविश्वासों का विरोध करती है। वह परंपरागत मूल्यों के प्रति विद्रोह करके क्रांति लाना चाहती है। क्रांतिकारी नारी समाज की संकूचित प्रवृत्तियों का विरोध करती है। क्रांतिकारी नारी शिक्षित ही होनी चाहिए ऐसी कोई नियम नहीं है। गॉव की अनपढ़ नारी भी क्रांतिकारी रूप में देखी जाती है। विवेच्य उपन्यास में प्रमुख रूप से दो पात्र क्रांतिकारी रूप में पाए जाते है।

३.६.१ सारंग :—

'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग है। जो एक क्रांतिकारी पात्र के रूप में परिलक्षित होती है। सारंग अतरपुर जैसे गॉव में रहती है। वह ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ी है। जब वह गुरूकुल में अपनी सहेली शकुंतला के सथ पढ़ रही थी। तब शकुंतला जवानी में भूल करती है। माताजी गुरूकुल के शास्त्रीजी का तबादला कराकर शकुंतला पर जुल्म करती है। उसे कोठडी में बंद कराके गुरूकुल के सारे काम करवाती है। एक दिन शकुंतला आत्महत्या कर लेती है। तब सारंग गुरूकुल की लड़कियों को इकठ्ठा कराके माताजी कके खिलाफ आवाज उठाती है। सारंग गुरूकुल की सारी लड़कियों से कहती

है,"कोई खाना खाने मत जाओ। विद्यालय, यज्ञशाला में पॉव तक न धरो। ये सब सूलीघर है। यहॉ के लोग ढोंगी है।"[१] इसतरह वह नारा लगाती है और गुरूकुल में क्रांति लाना चाहती है। लेकिन माताजी उल्टे सारंग के पिताजी को गुरूकुल में बुलाती है। और उनसे कहती है,"आपकी लड़की के चरित्र पर कोई लांछन नहीं, मगर वह इस हद तक उदण्ड है कि हमारा अनुशासन कायम रह नहीं पाता। इसको वापस ले जाना ही होगा।"[२]

इसतरह सारंग क्रांति लाना चाहती है। गुरूकुल में लड़कियों पर जो अत्याचार होते है उनके प्रति आवाज उठाना चाहती है। सारंग एक क्रांतिकारी पात्र के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

'चाक' में सारंग की बहन रेशम पर ससूरालवाले बहुत अत्याचार करते है। सारंग, रेशम को उनके प्रति, लड़ाई के लिए तैयार करती है, उसका हौसला बढ़ाती है। फिर भी रेशम उन लोगों का शिकार बनती है। सारंग अपनी बहन की हत्या का बदला लेना चाहती है।

अतरपुर गॉव में ऐसी अनेक घटनाएँ हुई है। स्त्रीयों पर अनेक प्रकारों से अत्याचार हुए है जैसे रस्सी के फंदे पर झूलती रूक्मणी, कुएँ में कूदनेवाली रामदेई, करबन नदी में समाधिस्त नारायणी सकल की चंदना, गुलकंदी और रेशम ये औरते अपने शील—सतीत्व के लिए मर गयी। सारंग को गॉव की भ्रष्ट व्यवस्था और बिरादरी के प्रति घृणा है। वह कहती है, "मेरे ससुर गजाधरसिंह, ग्रामप्रधान फत्तेसिंह, ग्रामसेठ भवानीदास पंडित चरनसिंह से लेकर उॅची नीची

---

१. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ ९१
२. मैत्रेयी पुष्पा — चाक — पृष्ठ ९२

कौमों के तमाम बूढे–बडे गुमसुम क्यों रह गए? ये पुरूष महापुरूष शाबाशी के पात्र है या धिक्कार के? इनकी लाज–लिहाज हम क्यों करते है? हम सारी अवस्था शीश झुकाकर काट देते है इनके सम्मान में क्यों? ये लोग हमारी हत्याओं के गवाह नही तमाशबीन बनकर क्यों रह जाते है? अन्याय के नामपर ये गूँगे हो जानेवाले हमारे संरक्षक .....।"[१] इस तरह सारंग एक क्रांतिकारी औरत की तरह उनके प्रति घृणा करती है।

सारंग डोरिया के खिलाफ हाय–कोर्ट में भी अपील करती हैं लेकिन डोरिया उसके बच्चे चंदन को मारने की धमकी देता है तब सारंग कहती हैं, "डोरिया मैं तुझे छठी का दूध याद दिला दूँगी, चाहे मुझे इसके लिए कुछ भी करना पडे। मेरी बहन को सजा देनेवाला तू होता कौन था? मुझे धमकाना तूने आसान समझ लिया सो मुझे बच्चे की धमकी!"[२] इस तरह सारंग डोरिया के खिलाफ विद्रोह करती है।

सारंग गॉव के स्कूल में आए श्रीधर मास्टर के प्रति आकर्षित होती है। इससे उसके दांपत्यगत जीवन में तनाव बढता है। लेकिन इस बात में सारंग कोई गैर बात नही मानती। सारंग अपने हक – अधिकारों के लिए रूढिवादी व्यवस्था के भ्रष्ट तत्त्वों से मुठभेड करती है।

सारंग गॉव की ऐसी पहली औरत है, जिसने पंचायत चुनाव में प्रधानपद के लिए अपना पर्चा भरा है। यहॉ वह क्रांतिकारी औरत बनती है। सारंग रूढिवादी पंचायत में औरतों को बोलने का हक न होना और उसे गवाही काबिल तक न मानने पर सख्त एतराज मानती है। और उसमें भी बराबरी एवं साझेदारी की मॉग करती है।

---

१. मैत्रयी पुष्पा– चाक, पृ. १४
२. वही – वही, पृ. ९५

गॉव की निरपराध गुलकंदी की हत्या से अंर्तव्यथित हुई सारंग सृष्टि विधात्री के प्रति समानता की मॉग करती है। वह गॉव में हो रहे स्त्रीयों के प्रति अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाती है। औरतों की दयनीय स्थिती में वह क्रांति लाना चाहती है। इस तरह सारंग एक क्रांतिकारी नारी के रूप में हमारे सामने आती है।

३.६.२ भुवन

'अगनपाखी' की नायिका के रूप में भुवन हमारे सामने आती है। भुवन की बहन मन्नू का ब्याह उसके पिताने चौदह साल की आयु में किया उसी वक्त भुवन ने जन्म लिया और नानाजी भगवान को प्यारे हूए। भुवन के जन्म के चार महिने बाद चंदर का जन्म हूआ। मौसी और बहनोइ संग–संग पल बढ रहे थे। भुवन चंदर की ओर आकर्षित होती है। और दोनो धीरे–धीरे बडे होते है। लेकिन एक–दुसरे से प्यार करते है। दोनों का प्यार समाजव्यवस्था के खिलाफ था। इसलिए चंदर के पिता भुवन के लिए भुवन के लिए कुँवर विजयसिंह का रिश्ता लाते है। विजयसिंह मनोरूग्ण थे यह बात किसी को मालूम न थी। भुवन को शादी के बाद पता चलने पर वह वापस ससूराल जाने से इन्कार करती है। लेकिन मॉ के समझाने पर वह ससूराल जाती है। कुँवर विजयसिंह की सेवा करती है। भुवन की सास उसे जोगिन बनने को कहती है तथा पोते का मूँह देखने के लिए भुवन को यज्ञ में बिठाती हैं। इस बात से भुवन और मन्नू परेशान होती है। और गुस्से से मन्नू कहती है की, "गले में जोगिन की कंठी डाल दी और कह रही है धियपूत जन। अब रंडो से कोई इतनी तो पूछे कि औलाद क्या पोथी–पत्तरा में से निकलती है?"[१] इस तरह मन्नू के साथ भुवन भी इन अंधविश्वासी बातों से परेशान होती है।

---

१. मैत्रेयी पुष्पा – अगनपाखी – पृष्ठ ८८

भुवन अपने पति का इलाज अस्पताल जाकर कराना चाहती है। लेकिन उसके जेठ आनाकानी करते है। लेकिन भुवन की सास रूढि—परंपरा के अनुसार भुवन को कुँवर के साथ सती जाने को कहती है। भुवन अपनी जान बचाना चाहती हैं। इसलिए आखिरी इच्छा के अनुरूप देवी के दर्शन करने हेतु देवी के मंदिर में जाती हैं। और वहॉ से पुजारी की मदद से भाग जाती है। इस तरह भुवन वहॉ से भागकर अपनी जान बचाती है। भुवन की सास विधवा बनकर रहती क्योंकि उसके पति की लाश नही मिलती। मगर भुवन क्रांतिकारी नारी के रूप में अपना कार्य करती हैं। राजा राममोहन रॉय ने सतीप्रथा को बंद किया था। लेकिन आज भी ग्रामीण जगहों पर यह दृश्य देखने को मिलता है। ऐसी रूढि परंपराऍं पुरानी हो गयी है। आज उनके प्रति विद्रोह हो रहा हैं। और खुद औरत ही इस परंपरा में क्रांति ला सकती है। इस तरह 'भुवन' क्रांतिकारी नारी के रूप में प्रकट होती है।

❖निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासों की नारी पात्रों ने विविध भूमिकाऍं निभायी है। विवेच्य उपन्यासों के नारी पात्र अपनी मौलिकता लिए हुए हमारे सामने आती है। मैत्रेयी जीने विवेच्य उपन्यासों द्वारा ग्रमीण नारी का यथार्थ चित्रण किया है। नागरीय जीवन से ग्रामीण नारी का जीवन किस तरह अलग है यह देखने को मिलता है। ग्रामीण नारी पात्र में अंधविश्वासी ग्रामीण नारी रूढि — परंपरा के घेरे में ग्रस्त नारी, अशिक्षित नारी, शिक्षित नारी आदि नारी के विविध रूप देखने को मिलते है। ग्रामीण नारी अशिक्षित होकर भी इसमें विद्रोह दिखाई

देता है। विद्रोही नारी के रूप में रेशम, सारंग और भुवन आदि ने अपनी भूमिकाएँ यथार्थ रूप में निभायी है। विवेच्य उपन्यासों में ग्रामीण नारी पात्रो में आधुनिकता, उनके विचारो में आधुनिकता की झलक भी दृष्टिगोचर होती है।

पुरूषप्रधान संस्कृती को नकारनेवाली आधुनिक नारी और साथ ही परंपरागत नारी परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यासों में विवाह को स्विकृत करनेवाली परंपरागत नारी भी अपनी अलग पहचान बनाती है। परंपरागत नारी के मॉ, पत्नी, बहू, सास आदि रूप पात्रानुकुल है। ग्रामीण नारी ज्यादातर अनपढ़ होती है। गॉवो में शिक्षा का अभाव दिखायी देता है। विवेच्य उपन्यासों में सास, बहू, मॉ के रूप में अनपढ़ नारी का रूप चित्रीत किया है। लेकिन ग्रामीण नारी अनपढ़ होकर भी विद्रोही और क्रांतिकारी रूप में भी दिखाई देती है। पारंपारिक मूल्यों के प्रति विद्रोह करनेवाली, अन्याय के खिलाफ लड़नेवाली क्रांतिकारी नारी का ओजस्वी रूप भी हमें देखने को मिलता है। एक नारी विद्रोह करके किसप्रकार क्रांति ला सकती है यह विवेच्य उपन्यासों में दिखायी देता है। सारंग एक ग्रामीण नारी क्रांतीकारी नारी के रूप में भी अपनी छाप डालती है। 'अगनपाखी' की भुवन परंपरागत नारी के प्रति विद्रोह करके क्रांति की नई मिसाल हमारे सामने रखती है। इसतरह विवेच्य उपन्यासों में नारी–पात्रों में ग्रामीण नारी, विद्रोही नारी, अनपढ़ नारी, क्रांतिकारी नारी आदि विभिन्न रूप भी परिलक्षित होते है।

मैत्रेयीजीने 'चाक' और 'अगनपाखी' दोनों उपन्यासों में नारी पात्रों की यथार्थता नारी पात्रों की भूमिका अपनी अलग पहचान बनाती है। इसलिए विवेच्य उपन्यासों के नारी–पात्र अपनी मौलिकता के रूप में पाए जाते है। इसतरह हमें दिखाई देता है कि मैत्रेयीजी एक

सफल उपन्यासकार है। वह नारी–पात्रों को विभिन्न रूप में कथावस्तू में प्रस्तुत करने में सफल है।